ASTRO ARPITA NATH

आपकी जन्म कुंडली में यमघंटक - वैदिक ज्योतिष

Arpita Nath द्वारा · समय एवं फलित · 2026-09-14

उपग्रहों (अप्रकाशीय छाया बिंदुओं) के अध्ययन में, अधिकांश ज्योतिषी गुलिक और मांदि पर ध्यान केंद्रित करते हैं - जो शनि की अंधकारमय, बाधा उत्पन्न करने वाली संतान हैं। हालाँकि, वृहत् पराशर होरा शास्त्र (BPHS) जैसे शास्त्रीय ग्रंथ शनि की छाया के अंधकार को ज्योतिष के सबसे शुभ छाया बिंदु के साथ संतुलित करते हैं: **यमघण्टक**।

बृहस्पति (गुरु) के सूक्ष्म, अभौतिक स्वरूप के रूप में माने जाने वाले, यमघण्टक दैवीय कृपा की एक अदृश्य ढाल के रूप में कार्य करते हैं। इनके नाम का अर्थ "यम (मृत्यु और धर्म के देवता) का घंटा" है, जो एक ऐसी चेतावनी की घंटी का प्रतीक है जो आपदा को टालने, बाधाओं को दूर करने और प्राण शक्ति की रक्षा करने के लिए बजती है।

खगोलीय और गणितीय स्वरूप

यमघण्टक एक कालवेला है - यानी समय पर आधारित एक विभाजन बिंदु।

दिन (सूर्योदय से सूर्यास्त तक) और रात (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) दोनों को आठ बराबर भागों (प्रहर या कला) में बांटा गया है। पहले सात भागों पर उस दिन के वार के अनुसार सप्ताह के दिनों के स्वामियों का शासन होता है और आठवां भाग स्वामी-रहित (lordless) होता है।

यमघण्टक उस भाग से संबंधित है जिसका स्वामी बृहस्पति (गुरु) होता है:
• **दिन का जन्म:** दिन का जो भाग बृहस्पति को आवंटित होता है, वह यमघण्टक का उदय बिंदु माना जाता है।
• **रात का जन्म:** रात का जो भाग बृहस्पति को आवंटित होता है, वह इसके उदय बिंदु को दर्शाता है।

क्योंकि इसमें बृहस्पति का विस्तृत और सुरक्षात्मक स्वभाव निहित होता है, इसलिए स्वाभाविक रूप से अशुभ गुलिक, धूम या व्यतीपात के विपरीत, यह एक कार्यात्मक शुभ उपग्रह के रूप में कार्य करता है।

मुख्य विशेषताएं और ज्योतिषीय प्रभाव

• **सुरक्षा कवच का प्रभाव**: कुंडली में यमघंटक जहां भी बैठता है, वह कठिनाइयों को कम कर देता है। भले ही यह किसी चुनौतीपूर्ण भाव में स्थित हो, फिर भी यह एक सूक्ष्म सुरक्षा चक्र प्रदान करता है जो जातक को पूरी तरह बर्बाद होने से बचाता है।
• **आयु और स्वास्थ्य का रक्षक**: चूंकि यह यम (मृत्यु के देवता) को दूर रखने का संकेत देता है, इसलिए व्यक्तिगत प्रमुख बिंदुओं (लग्न, सूर्य या चंद्रमा) के पास इसकी उपस्थिति शारीरिक सहनशक्ति, बीमारियों से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ और स्वाभाविक दीर्घायु प्रदान करती है।
• **बौद्धिक और नैतिक स्पष्टता**: बृहस्पति (गुरु) की ऊर्जा प्राप्त होने के कारण, यह जातक को उच्च नैतिक मूल्य, सही निर्णय लेने की क्षमता, उच्च शिक्षा में रुचि और गुरुजनों के प्रति सम्मान का आशीर्वाद देता है।

12 भावों में यमघंटक का प्रभाव

यमघंटक जिस विशिष्ट भाव में स्थित होता है, वह यह दर्शाता है कि आपके जीवन में ईश्वरीय संरक्षण और स्वाभाविक सौभाग्य कहाँ प्रकट होता है:

प्रथम भाव (लग्न / स्वयं)
• **अभिव्यक्ति**: स्वाभाविक आकर्षण, बौद्धिक संयम, सुदृढ़ जीवन शक्ति और एक मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है। जातक में स्वाभाविक आशावादिता होती है और वह आसानी से दूसरों का विश्वास जीत लेता है।

द्वितीय भाव (धन और वाणी)
• **अभिव्यक्ति**: जातक को परिष्कृत वाणी, कूटनीतिक संवाद शैली, असफलताओं के बाद भी वित्तीय सुधार और परिवार का अच्छा सहयोग प्राप्त होता है।

तृतीय भाव (प्रयास और साहस)
• **अभिव्यक्ति**: साहस को धर्मसंगत कार्यों में दिशा देता है। जातक को सहयोगी भाई-बहन मिलते हैं, उसकी संवाद कला मजबूत होती है तथा लेखन, मीडिया या हस्तकला में सफलता प्राप्त होती है।

चतुर्थ भाव (गृह और मन)
• **अभिव्यक्ति**: गहरी आंतरिक भावनात्मक संतुष्टि, शांतिपूर्ण पारिवारिक जीवन, माता के साथ अच्छे संबंध और वाहनों तथा घरेलू संपत्तियों को सुरक्षा प्रदान करता है।

पंचम भाव (बुद्धि और संतान)
• **अभिव्यक्ति**: तीक्ष्ण विश्लेषणात्मक बुद्धि, उच्च नैतिक स्पष्टता, उच्च शिक्षा में सफलता और संस्कारी व सहयोगी संतान का सुख देता है। सलाहकारी भूमिकाओं के लिए अत्यंत उत्तम है।

षष्ठ भाव (शत्रु, ऋण और स्वास्थ्य)
• **अभिव्यक्ति**: विरोधियों और दीर्घकालिक बीमारियों के विरुद्ध एक शक्तिशाली ढाल के रूप में कार्य करता है। विरोधी जातक को स्थायी नुकसान नहीं पहुँचा पाते और मुकदमों या कर्जों का समाधान समय के साथ अनुकूल रूप से हो जाता है।

सप्तम भाव (साझेदारी और विवाह)
• **अभिव्यक्ति**: एक बुद्धिमान, नैतिक और सहयोगी जीवनसाथी को आकर्षित करता है। व्यापारिक साझेदारियाँ सामान्यतः पारस्परिक लाभ और दीर्घकालिक स्थिरता पर आधारित होती हैं।

अष्टम भाव (आकस्मिक घटनाएँ और दीर्घायु)
• **अभिव्यक्ति**: दीर्घायु (आयुष) के लिए यह एक श्रेष्ठ स्थिति है। यह अचानक होने वाली दुर्घटनाओं से सुरक्षा प्रदान करता है, जानलेवा स्वास्थ्य संकटों को टालता है और अंतर्ज्ञान या गूढ़ अनुसंधानों में वृद्धि करता है।

नवम भाव (धर्म, भाग्य और पिता)
• **अभिव्यक्ति**: ईश्वरीय कृपा (भाग्य) का असाधारण योग बनाता है। पिता के साथ प्रगाढ़ संबंध, आध्यात्मिक परंपराओं के प्रति सहज सम्मान और लंबी यात्राओं में सफलता प्राप्त होती है।

दशम भाव (करियर और प्रतिष्ठा)
• **अभिव्यक्ति**: एक स्वच्छ पेशेवर छवि, निरंतर पदोन्नति, नैतिक नेतृत्व की भूमिकाएँ और वरिष्ठों, अधिकारियों तथा सरकारी हस्तियों की कृपा प्रदान करता है।

एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क)
• **अभिव्यक्ति**: निरंतर और नैतिक वित्तीय लाभ का प्रवाह बना रहता है। यह ज्ञानी, कुलीन मित्रों और सलाहकारों का एक ऐसा नेटवर्क तैयार करता है जो आवश्यकता के समय काम आते हैं।

द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष)
• **अभिव्यक्ति**: अत्यधिक हानिकारक खर्चों या अकेलेपन से सुरक्षा प्रदान करता है। मन को परोपकारी कार्यों, ध्यान, सुखद नींद और विदेशी भूमि में बसने की सफलता की ओर अग्रसर करता है।

प्रमुख ग्रहों के साथ युति

• **सूर्य के साथ:** प्रशासनिक अधिकार को बढ़ाता है, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा की रक्षा करता है और पिता के साथ संबंधों को सुधारता है।

• **चंद्रमा के साथ:** चिंता को शांत करता है, भावनात्मक उथल-पुथल को संतुलित करता है और एक स्थिर, शांत मानसिक स्थिति प्रदान करता है।

• **मंगल के साथ:** आक्रामक प्रवृत्तियों को अनुशासित साहस, तकनीकी सटीकता और रक्षात्मक नेतृत्व में बदलता है।

• **बुध के साथ:** व्यावसायिक समझ को तेज करता है, प्रभावशाली वाक्-शक्ति को बढ़ाता है और स्मरण शक्ति तथा विश्लेषणात्मक कौशल में सुधार करता है।

• **बृहस्पति के साथ:** आध्यात्मिक ज्ञान, उत्तम भाग्य और गहन दार्शनिक अंतर्दृष्टि का एक विस्तृत प्रभाव उत्पन्न करता है।

• **शुक्र के साथ:** सौंदर्यबोध को परिष्कृत करता है, सौहार्दपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देता है और सुख-सुविधाएं सुनिश्चित करता है।

• **शनि / राहु / केतु के साथ:** एक निष्प्रभावी बफर के रूप में कार्य करता है, जो पाप ग्रहों के कारण होने वाले गंभीर विलंब, अत्यधिक मोह या अचानक आने वाली रुकावटों को धीमा और सौम्य करता है।

---

https://astroarpitanath.com/hindi/yamaghantaka-in-birth-chart/
ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।